आर्योदय

ARYODAYE

Read Aryodaye on line -- www.aryasabhamauritius.mu

Weekly Aryodaye No. 361 ARYA SABHA MAURITIUS 1st May to 7th May 2017

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

ओ३म् ।। यऽआत्मदा बलदा यस्य विश्वऽउपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।३।।

यजु० २५/१३

भावार्थ – *जो आत्मज्ञान का दाता, शरीर, आत्मा और समाज के बल का देनेहारा, जिसकी सब विद्वान् लोग उपासना करते हैं और जिसका प्रत्यक्ष सत्यस्वरूप शासन, न्याय, अर्थात् शिक्षा को मानते हैं, जिसका आश्रय ही मोक्ष-सुखदायक है, जिसका न मानना, अर्थात् भक्ति न करना ही मृत्यु आदि दुख का हेतु है, हम लोग उस सुखस्वरूप सकल ज्ञान के देनेहारे परमात्मा की प्राप्ति के लिए आत्मा और अन्तःकरण से भक्ति, अर्थात् उसी की आज्ञापालन करने में तत्पर रहें । (स्वामी दयानन्द सरस्वती)*

Om Ya Atmadā Baladā Yasya Vishwa Upāsate Prashisham Yasya Devāḥ.
Yasyacchāyā Amritam Yasya Mrityuḥ Kasmai Devāya Havishā Vidhema.

Purport :-- *He who imparts self-knowledge and gives physical, spiritual and social strength, He who is worshipped by all sages and learned people and He whose governance and order is obeyed by enlightened people, He whose grace brings immortality and salvation and He whose disfavour causes death and misery, to this All-Blissful divinity we offer our humble prayers.*

Explanation :-- The above 'mantra' states that it is God who is the real provider of knowledge. It is He who provides us with all kinds of strength. He rules and administers justice impartially. This is why His orders are carried out by all enlightened persons. The injunctions of the Almighty are found in the Vedas -- God-given knowledge. Those who obey God are free from suffering and do not experience death but attain salvation. On those who disobey Him falls the snare of misery and death. The 'mantra' states that we must offer our humble prayers to that God who is All-Blissful and Merciful.

Dr O.N. Gangoo

सामाजिक गतिविधियाँ

सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के., आर्य रत्न, मंत्री आर्य सभा

स्कूल का वार्षिकोत्सव

रविवार दि० १६.०४.२०१७ को दिन के दो बजे पायोत मोंदेजीर आर्यसमाज का ११ वाँ वार्षिकोत्सव धूम-धाम से मनाया गया। इन दिनों उक्त पाठशाला में ८० से अधिक विद्यार्थियों को तीन अध्यापिकाएँ पढ़ा रही हैं। उच्च कक्षा के विद्यार्थियों को श्रीमती माणिक पढ़ा रही है।

मौके पर विद्यार्थियों द्वारा रोचक कार्यक्रम पेश किये गये, जिनमें पहली बार एक लघु नाटक प्रस्तुत किया गया ।

बच्चों के अभिभावकों की अच्छी उपस्थिति थी। साथ ही साथ वर्त्तमान सरकार के मिनिस्टर और पी.पी.एस. क्रम से एडी० ब्वासेजों और तुलसीराज बेनीदिन उपस्थित थे। आर्य सभा का प्रतिनिधित्व प्रधान डॉ० गंगू, उपप्रधान रामधनी, महामंत्री प्रीतम और अन्तरंग सदस्य श्री दोमा और श्रीमती पुचुआ ने किया।

कार्य का संचालन स्थानीय समाज की प्रधाना श्रीमती यालिनि रघु-यालाप्पा ने किया। दान स्वरूप लगभग १६,००० रुपये प्राप्त हुए ।

विष्णुदयाल जयन्ती

पिछले शनिवार १५.०४.२०१७ को प्रातःकाल पं० वासुदेव विष्णुदयाल की जयन्ती शेमें ग्रेन्ये के फूलबसिया आश्रम में मनायी गयी। वासुदेव का जन्म ठीक १११ वर्ष पहले तायाक रिव्येर दे जाँगी में हुआ था।

आश्रम की यज्ञशाला में सबसे पहले पंडिता द्वारा यज्ञ सम्पन्न हुआ । उपस्थित लोगों में पंडित जी की दो बेटियाँ श्रीमती दोमा और श्रीमती हरबंस अपने अपने पति के साथ उपस्थित थीं। यज्ञ के तत्कालबाद भजन-कीर्तन हुआ और पश्चात् श्री अरुण ने अपने पिता जी सम्बन्धी कुछ संस्मरण सुनाये जो कहीं भी लीखित रूप में प्राप्त नहीं हैं।

आश्रम के मानेजर राजेन्द्र प्रसाद रामजी ने पंडित जी के साथ अपने सम्बन्ध के बारे में सुनाया। आर्य सभा के अन्तरंग सदस्य श्री बुलाकी ने पंडित जी के जीवन का सार श्रोताओं के सामने खोलकर रख दिया।

आर्य सभा के महासचिव सत्यदेव प्रीतम ने चन्द शब्दों में बताने की कोशिश की कि क्यों पंडित जी ने उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए पंजाब का लाहौर और बंगाल का कोलकाता चुना था। स्नातक हो जाने के बाद क्यों गुरुकुल में पढ़ाने के बाद उन्होंने 'प्रोफ़ेसर' की पदवी पायी और जीवन भर प्रोफ़ेसर और पंडित जी के नाम से जाने गए।

समारोह के बाद सभी को भोजन से सत्कार किया गया।

हमने नवसंवत्सर और स्थापना दिवस मनाया

गत बुधवार दि० २९.०९.२०१७ को प्रातःकाल १०.०० बजे से १२.०० बजे तक चिरञ्जीव भारद्वाज बालगोबिन आश्रम के प्रांगण में भव्य रूप से नव-संवत्सर और आर्यसमाज स्थापना दिवस मनाया गया। देश के कोने-कोने से आर्यसमाज का प्रतिनिधित्व करते हुए, सहस्त्रों की संख्या में आर्य जन उपस्थित हुए थे। समारोह की शोभा बढ़ाने के लिए तीन मिनिस्टर और एक पी.पी.एस. भी आये हुए थे।

मौके पर एक रोचक कार्यक्रम तैयार किया गया था। स्वागत भाषण महिला मण्डल की अध्यक्षा श्रीमती धनवन्ती रामचरण द्वारा हुआ। भजन और भाषण साथ-साथ चलते रहे।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

सम्पादकीय

प्रेरणा-स्त्रोत

हमारे देश में अनेक आर्य पुरोधाओं ने बड़े ही पुरुषार्थ, दान-वीरता और निःस्वार्थ सेवाभाव से आर्यसमाज के उत्थान में अपने जीवन को समर्पित कर दिया है। उन सत्यवादी वेद प्रचारकों, मानव उद्धारकों के तपोमय जीवन से आज मॉरीशस में आर्यसमाज जीवित और जागरूक है। हम उन आर्य सपूतों के प्रति आभारी हैं।

आज हम उन महाव्रती आर्य सपूतों में से स्वर्गीय डा० चिरंजीव भारद्वाज के जनहितार्थ कार्यों पर अपने पाठकों का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं, क्योंकि उनकी मानवीय-सेवा आज के युवा-युवतियों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत है।

डॉ० चिरंजीव भारद्वाज का जन्म ६ जून १८७४ ई० को भारत के होशियारपुर पंजाब में हुआ था। वे बचपन से ही मेधावी, धर्मप्रिय तथा अध्ययनशील थे। दीन-दुखियों के प्रति उनमें दया की भावना थी। इसी सेवाभाव से प्रभावित होकर वे यूरोप डाक्टरी करने के लिए रवाना हुए और अपनी विद्वत्ता का प्रमाण देकर F.R.C.S, M.R.C.P, D.P.H की उपाधि प्राप्त करके सन् १९०५ में भारत लौटे, फिर बर्मा के रंगून शहर में मरीज़ों के इलाज में लग गए। चन्द सालों बाद अपने परम मित्र मणिलाल डॉक्टर की सलाह पर प्रवासी भारतीयों सेवा के निमित्त सन् १५ दिसम्बर १९११ ई० को सपरिवार मॉरीशस पहुँचे ।

डा० चिरंजीव भारद्वाज एक उत्तम चिकित्सक के साथ ही एक उच्च कोटि के वेद-प्रचारक, समाज-सुधारक, नेता और लेखक थे। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुमंगली देवी भी महिलाओं के उद्धार में समर्पित थी। उस दंपति के निःस्वार्थ सेवा से हिन्दू समाज में सुधार-कार्य होने लगा और आर्यसमाज का उत्थान होता रहा। उनका त्यागमय जीवन सचमुच प्रेरणादायक है ।

महान् सेवक डॉ० चिरंजीव भारद्वाज जी यहाँ विविध कठिनाइयों तथा समस्याओं को झेलते हुए, सारा दिन मरीज़ों के इलाज में लगे रहते थे और सायंकाल में सपत्नीक आर्यसमाज के आंदोलन कार्यों में जुट जाते थे। उनके अद्वितीय सामाजिक सेवा-कार्यों से प्रभावित होकर आर्यसमाज के सदस्यों में वृद्धि होती गई और डॉ० चिरंजीव भारद्वाज की प्रेरणा से लगभग ४० शाखा समाज की स्थापना हुई। उधर श्रीमती सुमंगली देवी से प्रेरित होकर महिलाओं में नई चेतना और जागृति पैदा होने लगी। वे दोनों पति-पत्नी हिन्दू समाज में अपने व्यक्तित्व, सज्जनता, प्रेमभाव और उदारता से जागरण पैदा करने वाले महाप्राणी थे। उनकी तपस्या, सहनशीलता और सेवावृत्ति से प्रेरित होकर जब अनेक आर्य नेता उत्पन्न होने लगे, तब वे अपने कर्त्तव्य निभाकर सन् १९१५ में भारत लौट गए ।

महाबलिदानी डा० चिरंजीव भारद्वाज जी एक निपुण शल्य चिकित्सक (surgeon) थे। रोगग्रस्त लोगों की सेवा करने के लिए उन्होंने प्रण लिया था और उनकी सेवा में स्वयं हैजे (cholera) का शिकार होकर भारत के लाहौर शहर में सन् ८ मई १९१५ ई० को बलिदान हो गए।

पाठको! हम समस्त हिन्दू परिवार स्वर्गीय डा० चिरंजीव भारद्वाज की सेवावृत्ति और प्रेरणा के प्रति ऋणी हैं। उनकी पुण्य तिथि के संदर्भ में हमें अपने शाखा समाजों में यज्ञ तथा अन्य गतिविधियों का आयोजन करना चाहिए, तभी हम उनकी तपस्या, सेवा और प्रेरणा से प्रेरित होकर आर्यसमाज के उत्थान में जागरूक रहेंगे।

आज के डाक्टरों, वकीलों तथा उच्च ओहदे पर कार्यरत युवा-युवतियों के लिए दम्पति डा० भारद्वाज का परोपकारी त्यागमय जीवन सचमुच प्रेरणा-स्त्रोत है।

नोट – *आपको सूचित किया जाता है कि स्वर्गीय डा० चिरंजीव भारद्वाज जी की पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में आर्य सभा के तत्वावधान में अनेक शाखा समाजों की ओर से भव्य कार्यक्रम किए जा रहे हैं । आप अपनी उपस्थिति से हमारे कार्यक्रम को अवश्य सफल बनाने की कृपा करें ।*

बालचन्द तानाकूर

पृष्ठ १ का शेष भाग

कार्यक्रम की समाप्ति पर सभी लोगों को भोजन से सत्कार किया गया।

बालगोबिन आश्रम की रसोइया

जब १९९५ में बालगोबिन आश्रम स्थापित किया गया तो हमें अनिवार्य रूप से एक रसोइये की सख्त ज़रूरत थी। हमने माँग की तो चार महिलाओं ने साक्षातकार में भाग लिया हमने दो को चुना था। एक थी ६० साल की श्रीमती मेनिका मोहन, जिन्होंने २२ वर्षों तक लगातार काम किया। उनके कामों से हम संतुष्ट थे। किसी भी प्रकार की शिकायत नहीं हुई। ३० मार्च उनकी सेवा का अंतिम दिन था।

पंडित राजेश्वर मधु जी की अकस्मात मृत्यु

डॉ० इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ

सचमुच जीवन का कोई ठिकाना नहीं। चलते-फिरते मनुष्य को कब मृत्यु आकर काल कवलित कर दे - कोई नहीं

सचमुच जीवन का कोई ठिकाना नहीं। चलते-फिरते मनुष्य को कब मृत्यु आकर काल कवलित कर दे - कोई नहीं जानता। मैं एम.बी.सी में अपने पाक्षिक 'प्रकाश' कार्यक्रम की रिकॉडिंग करने गया था, तो वे आकर मुझसे मिले, और उन्होंने पूछा कि क्या रिकॉडिंग हो गई? तो मैंने कहा हाँ !

पंडित राजेश्वर मधु जी एम.बी.सी. में हिन्दी विभाग के आसिस्टेंट प्रोजूसर थे। हम दोनों वर्षों से एक-दूसरे से परिचित थे। इसलिए जब मैं रिकॉडिंग करवाने जाता था, तो वे प्रायः मुझ से मिला करते थे। अरे ! मैं सुनकर आश्चर्य चकित रह गया कि राजेश्वर मधु का निधन हो गया। मैंने जाँच की तो पता चला कि एम.बी.सी में ही वे अचानक बीमार पड़ गये और गिर पड़े। तुरन्त उन्हें पड़ोस में स्थित 'आपोलो' अस्पताल ले जाया गया, जहाँ उनके प्राण पखेरू उड़ गये। वैसे तो देखने में वे स्वस्थ और चंगा दिखाई देते थे।

पंडित राजेश्वर मधु जी की मृत्यु ६१ वर्ष की आयु में हुई। वे हँसमुख और मिलनसार व्यक्ति थे। वे आर्य सभा के पंडित थे और बड़ी ईमानदारी से वैदिक सिद्धान्त के अनुसार पुरोहिताई का कार्य करते थे। उनकी अन्त्येष्टि के लिए बहुत से नर-नारी उनके स्थान पर पहुँचे थे। मौके पर उत्तर प्रान्त के वरिष्ठ पुरोहित पं० धर्मेन्द्र रिकाई ने कहा कि पं० राजेश्वर एक ईमानदार आर्य पुरोहित थे। अपने हिसाब-किताब सब ठीक से रखते थे। उनके निधन से आर्य जगत् को दुख पहुँचा है।

गुडलैंस में एक कर्मठ आर्य सेवी और प्रसिद्ध पंडित हुए थे, जिनका नाम बृजमोहन था, पर वे पं० सुग्रीम मधु नाम से अधिक जाने जाते थे। पं० सुग्रीम गुडलेंस और आस-पास के गाँवों में खूब वैदिक धर्म का प्रचार करते थे। मुझे याद है, वे रिव्येर जी रांपार में भी धर्म-प्रचार निमित्त आए थे। पं० सुग्रीम जी का प्रभाव उनके पुत्रों पर पड़ा। पं० राजेश्वर मधु और श्री ओमकार मधु जो एक Nursing Officer हैं, वे गुडलेंस आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ताओं में से हैं ।

दिवंगत श्री पंडित राजेश्वर मधु जी की याद में रिव्येर जू रांपार आर्य ज़िला परिषद् ने एक शोक सभा लगायी आर्य मंदिर गुडलेंस में । मौके पर पंडित धर्मेन्द्र रिकाई आर्य, पंडित सुदेश ब्रदी, ज़िला परिषद् के प्रधान श्री विवेकानन्द लोचन, श्रीमती सती रामफल,श्री बिसुनदेव बिसेसर आदि ने पं० राजेश्वर के प्रति अपनी भाव-भीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। उनकी आत्मा की सद्गति के लिए यज्ञ भी हुआ ।

पं० राजेश्वर की पत्नी विधवा ज्ञानेश्वरी मधु जो एक अध्यापिका हैं, तथा उनकी दो पुत्रियों तथा पुत्र के प्रति हम सहानुभूति प्रकट करते हैं और दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं ।

सम्पादकीय नोट – *पंडित राजेश्वर मधु जी के निधन से आर्य जगत् को बड़ी क्षति पहुँची है। परमेश्वर से हमारी हार्दिक प्रार्थना है कि इस अचानक विदाई से संतप्त परिवार के सदस्यों एवं पंडित जी के निकट जनों को धैर्य की प्राप्ति हो। आर्य सभा ने आठ अप्रैल को आर्य पुरोहित मंडल के सहयोग से आर्य भवन में सम्पन्न श्रद्धांजलि-यज्ञ के अवसर पर दुखी परिवार जनों के प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त की।*

शान्ति हिन्दी संस्थान के तत्वावधान में महायज्ञ

डॉ० इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ

रेनयों मोरेल, पेची राफ्रे के वयोवृद्ध ९० वर्षीय श्री रामदेव बोरण तथा श्रीमती बोरण ने रेनयों मोरेल शान्ति हिन्दी संस्थान के सहयोग से दो दिवसीय महायज्ञ तथा पारिवारिक सत्संग अपने स्थान पर शनिवार तथा रविवार ८-९ अप्रैल २०१७ को ठाना था, जो बड़े भव्य रूप से सम्पन्न हुआ।

महायज्ञ की पूर्णाहुति जो रविवार ९ अप्रैल २०१७ को हुई, उसमें भाग लेने बड़ी संख्या में आर्य जन स्त्री-पुरुष तथा बच्चे और छात्र-छात्राएँ उपस्थित थे। मुख्य पुरोहित आचार्य बितुला जी थे, और अन्य आर्य पुरोहित थे – पं० जिराखन, पं० सूरज नोयन तथा वयोवृद्ध पं० भोनन्दन बन्झू।

सभी उपस्थित जनों ने बड़े भक्ति-भाव से यज्ञ में भाग लिया । मौके पर उपस्थित आर्य सभा के प्रधान डॉ० उदय नारायण गंगू ने इस अनुष्ठान के आयोजन के लिए बोरण परिवार की बड़ी प्रशंसा की और विशेषकर श्री रामदेव बोरण को उनकी ९० वीं वर्षगाँठ के लिए अपने हृदय की गहराई से धन्यवाद दिया और उन्होंने अपने गम्भीर भाषण में **'ओ३म् भूर्भुव स्व.....'** की व्याख्या कर उसके महत्त्व को सुनाकर, श्रोताओं को प्रभावित किया।

मौके पर भजन-संगीत का बड़ा रोचक कार्यक्रम हुआ। आर्य गायकों में श्री नारद कालियाचेटी, श्री संतोखी तथा आचार्य बितुला की धर्मपत्नी जी के मधुर स्वरों में प्रभावशाली गाने हुए। उसके बाद प्रमाण-पत्र वितरण का समय आया। श्री रामदेव बोरण जी की सुपुत्री सुरेशा देवी बोरण पिछले २५ सालों से अपने गृह के बरामदे व प्रांगण में हिन्दी पढ़ाती हैं, जहाँ क़रीबन ५० बच्चे कक्षा एक से उत्तमा तथा एस.सी. तथा एच.एस.सी के छात्र-छात्राएँ पढ़ने आते हैं। इस इलाक़े की आर्य सभा द्वारा डॉ० इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ निरीक्षक तथा परीक्षक नियुक्त हुए हैं। उन्होंने अपने भाषण में कहा कि पिछले ५० सालों से वे पुरे फ़्लाक, पाम्प्लेमूस तथा रिव्येर जी रांपार की आर्य पाठशालाओं में निरीक्षण-परीक्षण कार्य करते आ रहे हैं। उन्होंने अध्यापिका सुरेशा बोरण की प्रशंसा की कि वे बड़े परिश्रम से छात्र-छात्राओं को पढ़ाती हैं। अपने गृह को पाठशाला का रूप देकर हिन्दी के प्रति उन्होंने कितनी उदारता दिखाई है।

उसके बाद परीक्षाओं में उत्तीर्ण छात्र-छात्राओं को, जिनमें डिप्लोमा प्राप्त छात्र-छात्राएँ थे, उनको माननीय असित गंगा, डॉ० उदय नारायण गंगू, डॉ० इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ तथा पंडितों के कर-कमलों से प्रमाण-पत्र तथा शिल्ड प्रदानकर उन्हें सम्मानित किया गया। अन्त में सब उपस्थित जनों का भोजन से सत्कार किया गया।

अभेदानंद आश्रम कार्च्ये मिलितेर आर्यसमाज में नवसंवत्सर एवं आर्यसमाज स्थापना दिवस

पंडिता चन्द्रिका राजू, वाचस्पति

गुरुवार ३० मार्च २०१७ को अभेदानन्द आश्रम कार्च्ये मिलितेर आर्यसमाज एवं आर्य महिला समाज, आर्य सभा मोरिशस के तत्वावधान में एवं मोका आर्य ज़िला परिषद् के सहयोग से नवसंवत्सर एवं आर्यसमाज स्थापना दिवस का आयोजन भव्य रूप से किया।

इस कार्यक्रम में मेहमानों के स्वागत हेतु, मन्दिर को अत्यन्त सुन्दरता से सजाया गया था। मन्दिर की साफ़-सफ़ाई करके, उसपर नया रंग चढ़ाया गया । ओ३म् के झंडे और चमकीले बल्बों के प्रकाश से मन्दिर जगमगा रहा था। उस मनमोहक और यज्ञमय वातावरण से भक्तगण गदगद हो गए।

इस विशेष अवसर पर, मोका ज़िला से अनेक महानुभाव आए थे। अन्य समाजों के प्रतिनिधियों ने अपनी उपस्थिति से कार्य की शोभा बढ़ाई। आर्य सभा मॉरीशस के उपप्रधान, श्री बालचन्द तानाकुर जी, महामन्त्री श्री सत्यदेव प्रीतम जी, मोका से श्री कृष्णदत्त सीबरन जी, नुवेल देकुर्वत के मान्य प्रधान श्री रामकरण जोखू जी, और भाई विज्ञानन्द प्रभु जी, दागोचियेर से श्रीमती बुझावन जी, काँतोरेल से श्री धनपत जी और श्री होसेनी जी, सेंप्येर से प्रसिद्ध गायक श्री ज्ञान महिपतलाल जी और उनके सहयोगी तबलावादक जी और अनेक गण्यमान्य जन आए थे।

मोका ज़िले के वरिष्ठ पुरोहित श्री सत्यानन्द फाकू जी, जुब्रैय से पंडित वेदव्रत सालिक जी, मोका से पंडिता अंजनी महिपत जी और कार्च्ये मिलितेर से पंडिता सविता तोकुरी जी आई थीं।

कार्यक्रम का शुभारम्भ ४.०० बजे यज्ञ से हुआ। नवसंवत्सर एवं आर्यसमाज स्थापना दिवस के विशेष मन्त्रों से बहुत सुन्दर ढंग से यज्ञ-कर्म किया गया। यज्ञ के बाद यज्ञ-प्रार्थना की गई और चूँकि सन्धि-बेला थी, इसलिए सभी ने मिलकर बहुत श्रद्धा से सन्ध्या की। सन्ध्या के बाद मोका ज़िले के मान्यप्रधान जी एवं अभेदानंद आश्रम कार्च्ये मिलितेर आर्यसमाज के कोषाध्यक्ष, श्रीमान् घूरा जी ने सभी आदरणीय महानुभावों एवं अतिथियों का स्वागत बड़े प्रेम और सम्मान से किया। उन्होंने अपना आभार प्रकट किया कि सभी धर्म-प्रेमियों ने कार्यक्रम में पधारकर अपने योगदान से सबको कृतार्थ किया।

स्वागत भाषण के पश्चात्, आर्यसभा के उपप्रधान श्री बालचन्द तानाकुर जी, 'आर्य रत्न' द्वारा नवसंवत्सर पर एक संदेश दिया गया। हमेशा की तरह, उनका संदेश शिक्षाप्रद था। आम जनता को समझने में सहज और लाभप्रद था।

उपप्रधान जी के उत्तम सन्देश के बाद, सेंप्येर निवासी, श्रेष्ठ गायक श्री महिपतलाल जी ने अपने बुलन्द और आनन्दित कर देने वाले मीठे स्वर में, नवसंवत्सर के अवसर पर अपने भजन से अभेदानंद आश्रम को गुँजा दिया और सभी भक्तों को मुग्ध कर दिया। सचमुच गायक महोदय जी की आवाज़ में एक अनोखा जादू है, जो श्रोताओं के दिलों को प्रेम-रस से तृप्त कर देती है और सभी के कानों में अमृत घोल देती है ।

श्री महिपतलाल जी के सुन्दर भजन के पश्चात्, आर्य सभा मॉरीशस के महामन्त्री श्री सत्यदेव प्रीतम जी, 'आर्य रत्न' का सन्देश हुआ। इतिहास के पन्नों को पीछे पलटकर, वे सभी श्रोताओं को आर्यसमाज की स्थापना से पहले के मॉरीशस का सफ़र कराने ले गए। उन्होंने आर्यसमाज स्थापना से पहले की गतिविधियों पर विस्तारपूर्वक एक रोचक और गम्भीर व्याख्यान दिया। सभी भक्तगण उनके व्याख्यान से लाभान्वित हुए ।

महामन्त्री जी के व्याख्यान के बाद श्री महिपतलाल जी द्वारा, आर्यसमाज स्थापना पर एक दूसरा भजन प्रस्तुत किया गया। उन्होंने अपने भजन के माध्यम से आर्यसमाज स्थापना पर प्रकाश डाला। सरस्वती माता साक्षात् उनके गले में वास करती है। सभी श्रोतागण उनके मन-मोहक भजन से मुग्ध हो गए ।

अंतःकरण को झकझोर देने वाले इस भजन के बाद, पंडिता अनजनी महिपत जी द्वारा एक सूचना दी गई। उन्होंने मोका आर्य ज़िला परिषद् के तत्वावधान एवं महिला मण्डल के सहयोग से १६ अप्रैल को १.३० बजे अपने गृह पर महिला दिवस मनाने के लिए सभी को आमंत्रित किया ।

पंडिता अनजनी महिपत जी की सूचना के बाद, समाज के अधिकारी श्री नरेन्द्र घूरा जी द्वारा धन्यवाद समर्पण किया गया। पुरोहितों और पुरोहिताओं द्वारा आरती-गान और शान्ति-पाठ के पश्चात् सभा का विसर्जन हुआ। सभी को भोजन से सत्कार किया गया। सभी लोगों ने संतुष्टि से अपने-अपने घर प्रस्थान किया।

रोड्रिग्स में आर्यसमाज स्थापना दिवस

श्रीमती लीलामणि करीमन, एम.ए.

'आर्यसमाज स्थापना दिवस' का धूम-धाम से मनाना मॉरीशस के परिपेक्ष्य में साधारण बात है। शताब्दी से अधिक समय बीत चुका है, जब से मॉरीशस में आर्यसमाज की स्थापना हुई, और आज भी आर्यसमाज का कार्य ज़ोर पकड़ता जा रहा है। इस वर्ष जहाँ मॉरीशस के चिरंजीव भारद्वाज आश्रम में आर्यसमाज स्थापना दिवस एवं नव संवत्सर का भव्य कार्यक्रम राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित हुआ एवं जिसका सीधा प्रसारण टी०वी० पर हुआ, वहाँ रोड्रिग्स में भी आर्यसमाज स्थापना दिवस एवं नव-संवत्सर के उपलक्ष्य में रोड्रिग्स आर्यसमाज की ओर से एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस उपलक्ष्य में आर्यसमाज के सदस्य श्रीमान् और श्रीमती आशील हीरासिंग के घर पर बृहद यज्ञ एवं सत्संग की सुन्दर व्यवस्था हुई, जिसमें ४० व्यक्तियों से अधिक लोगों ने भाग लिया और कार्य की शोभा बढ़ाई।

यज्ञ प्रातः १०.१५ बजे के लिए रखा गया था। पंडिता लीलामणि करीमन एवं उनके पति श्रीमान् भूरेन्द्रनाथ करीमन, श्रीमान् चीतू जी के साथ समय पर यज्ञ-स्थान पर पहुँच गए। डॉ० बन्धुआ भी साथ में थे। यज्ञ में डॉक्टर, इंजीनियर, उद्योगपति, व्यापारी आदि को उपस्थित देखकर उनमें धर्म-संस्कृति और भाषा-सभ्यता के प्रति श्रद्धा झलक आई। रोड्रिग्स के निवासी भी यज्ञ में उपस्थित हुए थे।

पंडिता लीलामणि करीमन द्वारा बहुत श्रद्धापूर्वक यज्ञ सम्पन्न हुआ। फिर अवसर से संबंधित सन्देश प्रस्तुत करते हुए, निम्नलिखित मंत्र पर व्याख्यान दिया गया -

ओं हते हँहमा मित्रस्य मा चक्षुषा
सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् ।
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि
समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ।।
यजु० ३६/१८

मन्त्र का सार-रूप इस प्रकार रखा गया।

संसार में ईश्वर ने सब प्राणियों के लिए जीवन-व्यवस्था की है। उस ईश्वर ने 'सर्वाणि भूतानि' सभी प्राणियों को समान अधिकार दिया है। अतः ईश्वर के दिए हुए इस संसार में हमें सभी प्राणियों को एक-दूसरे के प्रति मित्र की नज़र से देखना चाहिए। यदि हम चाहते हैं कि अन्य लोग हमारे साथ मित्रवत् व्यवहार करें तो हमें भी उनके प्रति राग-द्वेष-ईर्ष्या-दुश्मनी करने का कोई अधिकार नहीं है। अतः संसार में हमें सभी के प्रति परस्पर प्रेम का व्यवहार करना चाहिए।

फिर नव-संवत्सर – नये वर्ष के आरम्भ पर प्रकाश डालते हुए यह बताया गया कि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा साल का पहला दिन है और इसी पुण्य तिथि को ७ अप्रैल १८७५ ई० को स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भारतोद्धार के लिए आर्यसमाज की स्थापना की ।

रोड्रिग्स में बसे हमारे मॉरीशसवासियों को भारत की तत्कालीन स्थिति के बारे में बताया गया, जब भारत के लोग अन्धविश्वास, कुरीतियों आदि में डूबे हुए थे। अतः महर्षि ने उस समय की परिस्थितियों का अध्ययन किया और उस रास्ते को चुना, जो सब प्राणियों के कल्याण के लिए है। वह है – वेद का मार्ग अर्थात् सत्य का मार्ग । फिर स्वामी जी ने आवाज़ उठाई – 'हमें वेद की ओर वापस जाना है – 'Back to the Vedas!'

समय को ध्यान में रखते हुए रोड्रिग्स वालों के सामने आर्यसमाज के दस नियमों में से सिर्फ़ एक नियम पर प्रकाश डाला गया।

'सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।'

फिर नूतन वर्ष की मंगलकामनाओं के साथ सन्देश की समाप्ति हुई। इसके पश्चात् श्रीमान् अमीचन्द जी ने पंडिता के व्याख्यान का सार तत्त्व क्रिओल में समझाया। फिर श्रीमान् भाई चीतू जी ने सभी की उपस्थिति के लिए धन्यवाद समर्पित किया।

अन्त में आशीर्वाद, शान्तिपाठ से कार्य की समाप्ति हुई। प्रीतिभोज से सभी का सत्कार किया गया। ध्यान देने की एक विशेष बात यह है – जो भोजन बच गया था – उसे लेकर बच्चों के आश्रम – 'बालाजीरू आश्रम' में दान दिया गया।

सूचना

आर्यसमाज की हिन्दी पाठशालाओं के अध्यापक - अध्यापिकाओं को सूचित किया जाता है कि आर्यसभा में <u>एक</u> से <u>पाँच</u> तक की हिन्दी कक्षाओं की पुस्तकें उपलब्ध हैं ।

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू, *पी.एच.डी., ओ.एस.के., जी.ओ.एस.के., आर्य रत्न*
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम, *बी.ए., ओ.एस.के, सी.एस.के., आर्य रत्न*
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम,आर्य भूषण*
(४) प्रोफ़ेसर सुदर्शन जगेसर, *डी.एस.सी, जी.ओ.एस.के., आर्य भूषण*
(५) योगी ब्रह्मदेव मुकुन्दलाल, *दर्शनाचार्य*
इस अंक में जितने लेख आये हैं, इनमें लेखकों के निजी विचार हैं। लेखों का उत्तरदायित्व लेखकों पर है, सम्पादक-मण्डल पर नहीं ।
Responsibility for the information and views expressed, set out in the articles, lies entirely with the authors.
मुख्य सम्पादक
Printer : BAHADOOR PRINTING CO. LTD Ave. St. vincent de Paul, Les Pailles, Tel : 208-1317, Fax : 212-9038.

वेद भवन में महायज्ञ

पंडित रामसुन्दर शोभन, वाचस्पति

मॉरीशस के ग्राँ पोर्ट ज़िले के दक्षिण-पूर्व गाँव लेस्कालिये। सन् १९५४ में स्थापित लेस्कालिये आर्यसमाज वेद भवन से अधिक प्रचलित है। इस समाज की स्वर्गीय लच्छुमया लचाया जी ने प्रथम कुरसी सम्भाली थी। कोष का भार श्री बिसेसर राकाल ने उठाया था और मंत्रिपद से लेखनी पकड़ी थी श्री धरमवीर अवतार जी ने। इन तीनों के कार्यकाल में समाज शुक्लपक्ष के चाँद की तरह दिन-दूनी-रात-चौगुनी उन्नति करता चला गया ।

स्वामी दिव्यानन्द जी का पदार्पण मॉरीशस की भूमि पर १९७३ में प्रथम बार हुआ था। 'अकबर' यानी जहाज़ द्वारा ७०० प्रतिनिधियों के साथ उनका आगमन हुआ था। १९७५ में पुनः आकर उन्होंने मॉरीशस की पवित्र भूमि पर वेद की ज्योति जगाई। स्वामी दिव्यानन्द जी की जलायी अग्नि नवसंवत्सर और आर्यसमाज स्थापना दिवस के रूप में आज भी वेद भवन में प्रज्वलित रहती है। प्रतिवर्ष त्रिदिवसीय यजुर्वेद महायज्ञ बड़े हर्षोल्लास और भक्ति-भावना के साथ अविरल गति से सम्पन्न होता है। यज्ञ चार सत्रों में विभाजित होता है और वेद के मन्त्रों का पाठ स्वाहाकार के साथ होता है।

वर्ष २०१७ के ३१ मार्च शुक्रवार के दोपहर में वेद भवन के प्रांगण में ३६ वीं बार के लिए ओ३म् ध्वज ने गगन का स्पर्श किया। पं० सुनकसिंह जी, पंडिता अबिलक जी, पं० पाईडीगाडू जी और पं० रामसुन्दर शोभन जी के पौरोहित्य में सभी श्रद्धालु यज्ञ-प्रेमी ईश्वर-भक्तों ने यज्ञाग्नि को प्रज्वलित किया।

शुक्रवार के प्रथम सत्र में आचार्य विरजानन्द जी, योगी श्री ब्रह्मदेव मकुनलाल जी, वानप्रस्थी गोकुल जी और गण्यमान्य महानुभावों की उपस्थिति रही। सभागार प्रति सत्र में खचाखच भरा रहता था। माताओं के पवित्र हाथों से पके भोजन से सभी तृप्त होते थे। विद्वानों के शुभ विचारों को भक्तगण अपनी-अपनी झोलियों में भर-भर कर प्रस्थान करते थे।

१.०४.२०१७ शनिवार प्रातःकाल साढ़े आठ बजे यज्ञ का श्री गणेश हुआ। पंडित रामसुन्दर शोभन ने अपने भाषण से सभी भक्तों को प्रसाद बाँटा। दोपहर के तीसरे सत्र के यज्ञ में मुख्य वक्ता के रूप में पं० यशवन्तलाल चूड़ामणि जी अपनी संगीत मण्डली जी के साथ पधारे थे। लासुर्जिन संगीत मंडली और अतिथि मण्डली के ताल और स्वरों से वातावरण संगीतमय हो गया। पं० चुरामणि का सारगर्भित भाषण अविस्मरणीय हो गया। मानवों के कर्मों और फलों को भोगने के लिए ईश्वर ने सृष्टि की रचना की है, यह उनके भाषण का विषय था। पंडित जी भाषण के साथ-साथ गायन में भी अधिकार रखते हैं।

२.०४.२०१७ रविवार ८.३० बजे प्रातः यजमानों और पुरोहितों द्वारा यज्ञ प्रारम्भ हुआ। कुमार साहिल दौलत और कुमारी भावना द्वारा गायत्री मन्त्र का पाठ हुआ, जिन्हें उपस्थितों ने साधुवाद दिया। पूर्णाहुति के पश्चात् भजन का कार्यक्रम चला। आर्यसभा के प्रधान डा० उदयानारायण गंगू जी, आर्य रत्न, जी.ओ.एस.के, श्री बालचन्द तानाकूर जी आर्य रत्न और श्री चित्तवर्णम् पिल्ले जी ने अपनी उपस्थिति और संदेशों से यज्ञ में चार-चाँद लगा दिये।

भाषण चिन्तन का विषय रहा। श्री तानाकूर जी ने आर्यसमाज और आर्य की परिभाषा बताते हुए कहा कि यह समाज प्रेरणा का स्रोत है। श्री पिल्ले जी ने गायत्री मन्त्र पढ़कर वह वाक्य दोहराया – आर्यसमाज जगाने वाली संस्था है। स्वामी दयानन्द के प्रति नतमस्तक होकर कहा कि आर्यसमाज मूल्यों का स्रोत है। मानव मूल्यों का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि पहले पड़ोसी अपने घर की पकी तरकारी एक दूसरे को प्रसन्नतापूर्वक बाँटते थे और प्रेम से रहते थे। अब तो बड़ी-बड़ी दीवारें खड़ी हो गयी है। एक-दूसरे के प्रति सद्भावनाओं का अभाव हो गया है। इसमें सुधार लानी ज़रूरी है।

डा० गंगू जी ने ईश्वरोपासना का प्रथम मन्त्र सभी आर्य भक्त जनों से बुलवाया। पुनः अपना वक्तव्य प्रारम्भ किया। विषय था – परिश्रम से कमाए धन को व्यर्थ में व्यय न करके परोपकार में लगायें। विवाह एक सामाजिक और अटूट बन्धन है। परन्तु अब यह एक खिलवाड़-सा बन गया है, दो ही दिन तक आज का विवाह निबह रहा है। डा० गंगू जी इस दयनीय परिस्थिति से दुखी हैं। वैवाहिक जीवन को सफल बनाने के अनेक विचार दिये।

धन्यवाद और शान्तिपाठ के साथ कार्य की इति हुई और सभी ने प्रेम से सहभोज किया ।

इतिहास ....

पं० देवीदत्त शर्मा का निधन

पं० रामअवध शर्मा की मृत्यु के पाँच वर्ष के तदन्तर पिछले शनिवार सायंकाल को ४.०० बजे, पं० देवीदत्त के निधन का समाचार हमें प्रकाशित करने पड़ता है। यह एक शोकजनक घटना है। आप पुरोहित और प्रसिद्ध भागवती पंडित थे। 'हिन्दू मॉरीशस' नामी पुस्तक में पं० आत्माराम ने लिखा हैं कि पंडित देवीदत्त जी के पिता ने प्रथम बार मॉरीशस में भागवत बांचा था। आप एक लेखक वक्ता थे। पं० बलदेव, पं० रामावध और पं० देवदत्त की मृत्यु ने हिन्दु-धर्म को हानि पहुँचाई है। उनके डौल के बाबाजी अब कम नज़र आते हैं। उनके खाली स्थानों की पूर्ति होना असम्भव प्रतीत होता है। 'इन्डियन टाइम्स' (दैनिक) के आप संपादक रहे हैं। आपने भारत की दो बार यात्रा की है। कुछ दिनों से सरकारी इन्फोमेशन ऑफिस में काम करते थे। उनके परिवार के साथ हम सहानुभूति प्रकट करते हैं और उनकी आत्मा की सद्गति चाहते हैं।

आर्यवीर, १७ अप्रैल १९४२
प्रेषक : प्रह्लाद रामशरण

<u>सम्पादकीय नोट</u> – उपर्युक्त सूचना की भाषा अक्षरशः लेखक महोदय की है । सम्पादक मंडल ने सुधार करना आवश्यक नहीं समझा ।

Our weekly Satsanghs

Professor Soodursun Jugessur, Arya Bhooshan

In order to give meaning to our weekly satsanghs in our shakha Samajs, and in order to attract more youth in our activities, there is a need to review the way we conduct them. To inspire ourselves for this, let us go revisit the early days of the setting up of the Arya Samaj in India in 1875 by Swami Dayanand Saraswati.

After not having met with success in Rajkot, the first meeting of followers of Swamiji to work out the principles and establish an Arya Samaj took place in Bombay on 07 April 1875, at the place of one Dr. Manak, and presided by Mr. Girdhari Lal Dayal Dass Kothari, B.A., LL.B. Twenty-eight rules were drafted after discussions. The 11th rule states that, to help members be in the right frame of mind, the members should be 'calm and composed in their minds, and in the spirit of love and free from bias, they may ask questions and obtain answers from each other. This done, they shall sing the hymns of Sama Veda in praise of God, and songs bearing on true Dharma, righteous conduct and right teaching, to the accompaniment of musical instruments. **And the mantras shall be commented upon, and explained and lectures delivered on similar topics. After this there shall be music again, to be followed by interpretation of mantras and speeches as before and so on in succession.'**

The 14th rule states that the Samaj shall **'do stuti, prārthanā and upāsanā, that is, to glorify, pray to and hold communion with the one and only God, in the manner commanded by the Vedas.** To speak of God as the Being who is formless, almighty, just, infinite, immutable, eternal, incomparable, merciful, the father of all, the mother of the entire universe, all-supporting, the Lord of all, possessing the attributes of truth, intelligence, happiness, and so on, as all-pervading and the knower of all hearts, indestructible, deathless, everlasting, pore and conscious, as inherently in a state of salvation, to speak of Him as endowed with such and similar other qualities and attributes ***is Stuti***, that is to glorify and praise Him. Asking His help in all righteous undertakings is identical with **Prārthanā**, that is praying to him and to become absorbed in the contemplation of His Essence, which is Absolute Happiness, is termed **Upāsanā**, that is holding communion with Him. The aforesaid Being, possessing the attributes of incorporeity, etc., shall alone be adorned and naught besides.'

The other rules speak about the other activities like sevā, shikshā, prachār, fundraising that we usually do. How much of the two previous rules do we obey and practice? This is the main issue that I wish to raise, and ask our leaders at all levels to deliberate upon. We have been for over a century promoting the Arya Samaj in Mauritius, and we know where we are, and what are our realisations and failures. Is it not time to review our stand and reorient our activities as the founding fathers had envisaged? We keep complaining of poor participation and disinterest of our youth in our Samaj.

When we go for a weekly satsangh wherever this still takes place, we see more or less the same program, namely a long hawan, a couple of chants, and rarely an enlightened talk by the elite in the community. The purohits perform the hawan and are content with it, and hardly ever take the trouble of explaining the meaning of the mantras. At times I feel that a pre-recorded hawan would have done the same job! Our pundits and purohits are expected to know the meanings of the mantras, the problems of the members of the Samaj. And they need to speak about them and give suggestions for solving the problems. So many of our people are turning to other proselytizing faiths where their needs are better served.

Why can't we, at every weekly satsangh invite the son or daughter of a member of the samaj, past or present, who can address the audience on current issues, or on aspects of our shastras? Why can't we give the youth an opportunity to present programs of their liking, as long as they do not go against the principles of the Arya Samaj?

If we make an effort to go back to the methodologies prescribed in the 11th and 14th rule described above, I am confident this will bring a positive change. Many Hindu sects are sprouting on the basis of Yoga and meditation. Invariably they emphasize on the **upāsanā** aspect described above, and are bringing some individual transformation. The Arya Samaj, with its three-fold pronouncement on Stuti, Prārthanā, and Upāsanā, can make a greater contribution to both individual and social transformation. It is never too late to reform!

Even Swamiji changed his views over the course of time. In the ten principles of Arya Samaj that were adopted later on 24 June 1877 by the Bombay Arya Samaj, these have been normalized for the benefit of all. He had initially been influenced by the Prārthanā Samaj, but had to displease some orthodox people who believed in the caste system and wanted to soften the stand of the Samaj by adopting aspects of the Advaita doctrine which he himself had followed in the early days of his life. Through deeper knowledge of the Vedas, he had found its weakness and shifted on to preaching the doctrine of the difference and eternity of the Brahman, Soul, and Matter.

We also need to change with the times without compromising the basic principles that are based on the wisdom of the eternal Vedas. We need to reorient our weekly satsanghs so as to make them more meaningful and attractive to a new generation of youth.

sjugessur@gmail.com

Reference : 'Dayananda, His life and work.' Suraj Bhan, DAV Publications, 2001.

HONORING A MAKER OF OUR HISTORY

Remembering the Work & Struggle of Pandit Basdeo Bissoondoyal, 1906-1991

By Satyendra Peerthum, Researcher & Historian

Professor Basdeo Bissoondoyal was born in April 1906 and this year marks the 111st anniversary of his birth. He was one of the most important historical and religious figures of 20th century Mauritius and of the local Arya Samaj movement. Pandit Bissoondoyal was a Mauritian patriot, a Gandhian, Hindu missionary and an eminent writer. Through his actions, writings, speeches, and the Jan Andolan, his socio-cultural movement, he was a maker and shaper of modern Mauritian history.

- **The Historical Figure**

In 1991, the late Uttam Bissoondoyal, former Director of the Mahatma Gandhi Institute and Basdeo's nephew, captured the essence of his uncle's long struggle in Mauritius, when he wrote in his preface to the fifth volume of *The Collected Works of Basdeo Bissoondoyal : "Basdeo's life has integrated the intellectual and spiritual life and the political, social, and cultural uplift of the Indian community. Without him, future historians will no doubt say, our history would not have been the same. Although he became the exponent of the Indianism of Gandhi, Tagore, and Dayanand and propagated a new vision of the intellectual and spiritual India".*

Indeed, today historians unanimously agree that, as a defender and leader of the oppressed people of our country, Pandit Basdeo Bissoondoyal followed in the footsteps of such illustrious Mauritian historical figures as Reverend Jean Lebrun, Rémy Ollier, Napoleon Savy, Adolphe de Plevitz, Manilall Doctor, Pandit Cashinath Kistoe, Dr. Maurice Cure and Emmanuel Anquetil.

- **The Man of the People**

Between 1939 and 1991, Professor Bissoondoyal was a leader and a key figure in the Indo-Mauritian community and of the local Arya Samaj movement. He greatly influenced and molded three generations of Indo-Mauritians through his estimated 6,000 public sermons, hundreds of bhaitkas, and extensive writings. For a period spanning more than five decades, he dedicated his life to reviving and firmly entrenching Hindu traditions, customs, and values into the lives of Indo-Mauritians throughout the island.

Ever since December 1939, Bissoondoyal used public sermons, bhaitkas, and the organization of mass Hindu festivals to preach and educate the Mauritian masses. In his brilliant biography of Pandit Bissoondoyal, Abhimanyu Unnuth, a well-known Mauritian writer, eloquently explained : *"The missionary, Basdeo Bissoondoyal, answered the call of the moment: he toured every village and every town. Through his sermons, his books and the influence he exerted on the people, he imparted to them the strength needed to stem the strong current which was forcibly carrying them away. This was nothing less than the process of a powerful revolution which in years to come was to constitute the foundation of a significant cultural and political movement".*

Prof. Basdeo Bissoondoyal and his followers the Swayam Sevak during the 1950s.

Kriyātmak Yoga Series : Increasing our satisfaction quotient

Santosha, the effective and efficient antidote to dissatisfaction

The Patanjali Yoga Sutras constitute a practical philosophy and an applied science of life. They provide all the tools, techniques, processes, the road map and compass to a harmonious material, spiritual and social life.

Astānga Yoga (the eight limbs of yoga), beginning with *yama-niyama* and culminating in *dhyāna* and *samādhi*, present a systematic, sequential and holistic approach for personality development. The five *niyama* constitute a very high order of personal discipline of the practitioner which prepares the individual to be resilient vis-à-vis the complexities of life, restoring the tranquillity of the mind for focused work.

Santosha, one of the 5 *niyama*, is the sense of satisfaction, i.e. joyfully accepting the fruit(s) of our actions resulting from the combined full efforts of our intellect and physical force in such actions. Satisfaction is the fulfilment of one's wishes, expectations, or needs, or the pleasure derived from an action. It leaves a sense of achievement, delight, peace of mind, positivity, well-being, etc.

On the other hand, dissatisfaction is the non-fulfilment of one's wishes, expectations, or needs, or the annoyance, discomfort, frustration, jealousy, negativity, oppression, remorse, uneasiness, etc. derived from an action. *Dissatisfaction is the common denominator in our so-called modern life, indeed a wrong denominator.*

Why dissatisfaction has been / is / will be the denominator of modern life?

Few have the sense of self-balance and self-acceptance. Fewer still have the sense of acceptance of those in front of them, more importantly those who are better-off on either material or spiritual levels. A broad intellectual background is essential for capacity building to evenly face the favourable and adverse situations of life.

Yoga is a science par excellence to achieve success in any endeavour

"Tapah-svādhyāya-ishvara pranidhānāni-kriyā-yoga" [YD 2.01]. (i) *Tapah*: to live as per the tenets of dharma (virtue) and have the right disposition vis à vis reverse situations like hot-cold, fame-disgrace-disregard, benefit-loss, etc.; (ii) *Svādhyāya*: the study of the Vedas and allied literature *(ārsha granthas)*, recitation of and meditation upon the Vedic hymns (mantras) and OM, the practical applications of the Vedic teachings in day-to-day life which Maharishi Manu explained in the shloka: *āchārah paramo dharmah*; (iii) *Ishvarapranidhāna*: to surrender all our thoughts, speech and physical actions *(mānasika, vāchanika & shāreerika kriyāon)* to the Supreme mentor / coach / teacher (parama Guru) and have no desire for the good we have done.

These three merits are instrumental to success in Yoga and the spill over effect is success in all endeavours in life.

Benefits of Tapah, Svādhyāya & Ishvara-pranidhāna

Any person who pursues these three values will be empowered with the sense of 'equanimity', i.e. be level-headed - neither feel proud because of success nor be upset in difficult situations. Equanimity is not a state of mind, rather it is the real nature of human beings …regrettably, a quality which we have thrown away to surrender to sensual cravings, anger, greed, attachment.

Kāma, krodha, lobha, moha, etc. extinguishes the flame of equanimity. Thereafter we operate solely at the level of the individual or ego, indeed a rat race to earn name, fame and accumulate worldly riches by hook or by crook, as well as trespass other's rights.

The four sublime attitudes

Sage Patanjali's describes loving-kindness, compassion, joy and indifference [*maitri-karuṇā-mudita-upekṣhā (*YD1.33)] as the fuel to keep aglow the inner flame of equanimity, leading to dispassion (*vairagya*).

The regular practice of true yoga: yama-niyāma-āsana-pranāyāma-pratyāhāra… (YD2.29), clears the mind and brings one toward a state of health and balance.

The outcome

Ego ceases to operate. One is fully aware of his real self… he does not cling to the world… he acts more as a 'witness' or 'seer'… he sees the world unfolding (clarity of mind & thoughts)… he no longer identifies himself with the body or the mind… ceases to view himself as finite and limited.

The only unchanging reality is pure awareness. That is no new knowledge. In fact the Vedas, Shāstras, Upanishads, etc., all state that upon renouncing the limited identity, the true nature sprouts out and reveals itself: ātma shākshātkāra.

..... to be continued

Yogi Bramdeo Mokoonlall, Darshanācharya (Snātak - Darshan Yog Mahavidyālaya) Arya Sabha Mauritius

Bibliography: Satyārtha Prakāsh, RigVedādi Bhāshya Bhumikā, (Maharishi Dayānand Saraswati)
Yoga Darshanam (Maharishi Patanjali, Vyāsa Bhāshya & Yogārtha Prakāsh Swami Satyapati Ji Parivrājak)